HISTORY

B.A.PART-II (Hon's)

Paper-III [History of India (1200-1526)AD]

Unit-III, (Saiyyad Dynasty)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 51

"सैय्यद वंश (1414-1450)"

(Saiyyad Dynasty)

 # खिज्र खाँ (1414 से 1421)

खिज्र खाँ सैय्यद वंश का संस्थापक था । इसने दौलत खां को पराजित कर 1414 ई. में दिल्ली की राजगद्दी पर अधिकार कर एक नए राजवंश की स्थापना की। जिसका नाम था "सैयद वंश"।

खिज्र खां बहुत ही विनम्र स्वभाव का व्यक्ति था। जब वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा तो उसने सुल्तान की उपाधि न धारण कर अपने को "रैयत- ए-आल" की उपाधि से ही खुश रखा। तैमूर लंग जिस समय

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

भारत से वापस जा रहा था, उसने खिज्र खाँ को मुल्तान, लाहौर एवं दीपालपुर का शासक नियुक्त कर दिया। खिज्र खाँ अपने को तैमूर के लड़के शाहरूख का प्रतिनिधि बताता था और साथ ही उसे नियमित कर भेजा करता था। खिज्र खाँ के शासन काल में पंजाब, मुल्तान एवं सिन्ध पुनः दिल्ली सिंहासन के अधीन हो गये । इसने अपने समय में कटेहर, इटावा, खोर, चलेसर, ग्वालियर, बयाना, मेवात, बदायूँ के विद्रोह को कुचल कर उन्हों जीतने का प्रयास किया । फरिश्ता ने खिज्र खाँ को एक न्यायप्रिय एवं उदार शासक बताया। 20 मई 1421 को खिज्र खाँ की मृत्यु हो गई।

 # मुबारक शाह (1421 से 1434)

खिज्र खाँ ने अपने पुत्र मुबारक शाह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। उसने ' शाह' की उपाधि ग्रहण कर अपने नाम के सिक्के जारी किये । अपने शासन काल में मुबारक शाह ने भटिण्डा एवं दोआब में हुए विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया परन्तु खोखर जाति के (नमक की पहाड़ी) के नेता जसरथ द्वारा किये गये विद्रोह के दबाने में असफल रहा। मुबारक शाह के समय में ही पहली बार दिल्ली सल्तनत में दो महवपूर्ण हिन्दू अमीरों का उल्लेख मिलता है । मुबारक शाह के वजीर 'सरवर-उल-मुल्क' ने षडयन्त्र द्वारा 19 फरवरी 1434 को उस समय उसकी हत्या कर दी, जिस समय वह अपने द्वारा निर्मित नये नगर मुबारकबाद' का निरीक्षण कर रहा था। इसने विद्वान याहिया बिन अहमद सरहिन्दी को

Dr Gundu Kumari (A.N.D College)

अपना राज्याश्रय प्रदान किया। इसके ग्रंथ 'तारीख ए - मुबारकशाही' में मुबारक शाह के शासन काल के विषय में जानकारी मिलती है।

 # मुहम्मद शाह (1434 से 1445)

मुबारक शाह के बाद दिल्ली की गद्दी पर मुबारक का भतीजा मुहम्मद बिन फरीद खां मुहम्मद शाह के नाम से बैठा । इसके शासन काल के 6 महीने इसके वजीर सरवर-उल-मुल्क के आधिपत्य में बीते, परन्तु छः महीने उपरान्त सुल्तान ने अपने नायब सेनापति कमाल-उल-मुल्क के सहयोग से वजीर का वध करवा दिया । वजीर के प्रभाव से मुक्त होने के तुरन्त बाद मालवा के शासक महमूद द्वारा दिल्ली पर आक्रमण कर दिया गया । मुहम्मद शाह मुल्तान के सुबेदार बहलोल की सहायता द्वारा महमूद को वापस करने में सफल रहा । मुहम्मद शाह ने खुश होकर बहलोल को 'खान-ए-खाना' की उपाधि दी और साथ ही उसे अपना पुत्र कह कर पुकारा । अपने अन्तिम समय में हुए विद्रोह को दबाने में मुहम्मद शाह असमर्थ रहा, अतः अधिकांश राज्यों ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर लिया । 1445 में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई । इसकी मृत्यु के साथ ही सैय्यद वंश पतन की ओर अग्रसर हो गया।

 # अलाउद्दीन आलम शाह (1445-50)

मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन 'अलाउद्दीन आलम शाह' की उपाधि ग्रहण कर सिंहासन पर बैठा । यह आरामपसन्द

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

एवं विलासी प्रवृत्ति का था । अलाउद्दीन आलम शाह को अपने वजीर हमीद खाँ से अनबन होने के कारण दिल्ली छोड़ कर बदायूँ जाना पड़ा । हमीद खाँ ने बहलोल लोदी एवं सूबेदार कियाम खाँ (नागौर) को दिल्ली बुलाया बहलोल ने दिल्ली आने के कुछ दिन पश्चात हमीद खाँ की हत्या करवा कर 1450 में दिल्ली प्रशासन को अपने कब्जे में कर लिया । दूसरी तरफ सुल्तान अलाउद्दीन आलमशाह ने अपने को बदायूं में ही सुरक्षित महसूस किया और वही पर 1476 में उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार करीब 37 वर्ष के बाद सैय्यद वंश समाप्त हो गया।

सैय्यद कालीन वास्तुकला

इस समय तक स्थापत्य कला का पतन आरंभ हो चुका था। सैय्यद कालीन इमारतों को खिलजी कालीन इमारतों की नकल भर माना जा सकता है। इस काल में खिज्र खां द्वारा स्थापित खिज्राबाद एवं मुबारक शाह द्वारा स्थापित नगर मुबारकाबाद का निर्माण हुआ।

सुल्तान मुबारक शाह सैयद का मकबरा:- यह मकबरा मुबारक नामक गांव में स्थित है। मकबरे के चारों ओर बने बरामदे की ऊंचाई अधिक है। गुंबद के शिखर को डॉटदार दीपक से सुसज्जित करने का प्रयास किया गया है। मार्शल के अनुसार इस मस्जिद का सबसे बड़ा दोष यह है कि निर्माणकर्ताओं ने इसे इतना ऊंचा बना दिया कि दर्शक सरलता से इसे देख ही नहीं सकते।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मुहम्मद शाह का मकबरा:- इस अष्टभुजीय मकबरे में अत्यधिक ऊंचाई होने के दोष को दूर किया गया है। मकबरे में कमल आदि प्रतरूपों की साज-सज्जा हेतु चीनी टाइलों का उपयोग किया गया है।

Thanks

Dr Guddy kumari (A.N.D College)